बच्चे हर जगह यीशु के साथ चलते हैं

चुनौती छोटे समूहों के लिए

कार्य पुस्तिका

7 सत्र जो हमें चुनौती देते हैं हमारे अपने संदर्भ का पता लगाने,
हमारी सोच को बढ़ाने, और नई नई सम्भावनाओं की खोज करने
ताकि हमारे समुदाय में, हम देखने पाएँ

रुकिए और सोचिए

बच्चे

उन्हें परमेश्वर की दृष्टिकोण से देखना

रुकिए हर बच्चा विशेष रूप से परमेश्वर के स्वरूप में बनाया गया है और वह उनसे प्रेम करता है। यदि हम यीशु के साथ चलने में उनकी मदद करना चाहते हैं तो हमें उन्हें जानने और मूल्यवान समझने की आवश्यकता है जैसे वह करता है।

सोचिए मैं अपने आस-पास के बच्चों को कितनी अच्छी तरह से जानता हूँ, उनकी दुनिया को समझता हूँ और चाहता हूँ कि उनकी आवाजें सुनी जाए और उन पर अमल किया जाए?

हर जगह

उनकी दुनिया में प्रवेश करना

रुकिए टूटे हुए परिवेश में बच्चों की सुरक्षा और पोषण की कमी है जिनकी उन्हें जरूरत होती है। अच्छा चरवाहा चाहता है कि बच्चे हरी चराइयों और शान्त जल के बीच चलें फिरें जहाँ वे बढ़ सकते हैं।

सोचिए क्या हम सुरक्षा और पोषण के वातावरण बना रहे हैं जहाँ बच्चे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों के मध्य में भी बढ़ सकते हैं?

यीशु

दूसरों को यीशु से मिलाना

रुकिए जैसे-जैसे बच्चे यीशु के साथ चलते हैं, वे उसे और उसके आशा के संदेश को दुनिया में लाते हैं। वे उसे उन जगहों और तरीकों से बता सकते हैं जो बड़े लोग नहीं कर सकते हैं।

सोचिए क्या मैं उस योगदान की ओर देख रहा हूँ जो बच्चे महान आज्ञा के लिये दे सकते हैं?

के साथ

सम्बन्धों के माध्यम से बढ़ना

रुकिए परमेश्वर हर बच्चे के साथ एक रिश्ता चाहता है। जैसे-जैसे हम उनके साथ चलते हैं, हम उनका समर्थन करते हैं और उन्हें जीवन और विश्वास के प्रति सोच रखने में मदद करते हैं।

सोचिए क्या मैं बच्चों के साथ अपने सम्बन्धों को उनके लिये परमेश्वर के साथ जीवन परिवर्तन अनुभवों के होने के लिये खुले हुए अवसरों के रूप में देखता हूँ?

चलते हैं

यात्रा में आगे बढ़ना

रुकिए यीशु के साथ चलना सीखना कहीं भी, किसी भी समय, किसी के भी साथ- या अकेले के द्वारा हो सकता है। औपचारिक और अनौपचारिक सीखने के अनुभव दोनों परमेश्वर में गहरी जड़ें विकसित करने के लिये महत्वपूर्ण हैं जो बच्चों को मजबूत खड़े होने में सक्षम बनाते हैं।

सोचिए जैसे-जैसे मैं बच्चों के साथ जीवन और विश्वास की खोज करता हूँ, क्या मैं रचनात्मकता, प्रासंगिकता और आत्म विश्वास का प्रदर्शन करता हूँ कि परमेश्वर बाइबिल और प्रार्थना और जीवन के अनुभवों के माध्यम से उनसे बात करता है?

परिचय

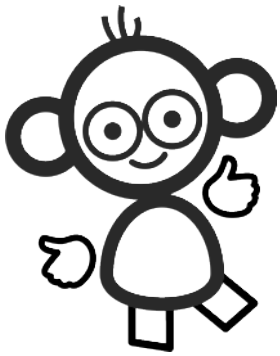

बाइबिल हमें बच्चों का परमेश्वर के साथ चलने और इसके परिणामों की एक बहुत सकारात्मक तस्वीर देती है

दानिय्येल और उसके मित्रों ने एक पराए देश, मूर्तिपूजक संस्कृति के प्रभाव का सामना करने और उसे बदलकर बेहतर बनाने के लिये अपने घरों और समुदाय में पर्याप्त प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की।

तीमुथियुस की माता और नानी ने उसे बचपन से परमेश्वर के बारे में बताया, एक विरासत में मिली शिक्षा जिसकी प्रशंसा पौलुस ने जिनका वह अगुवा बना उनके लिये उनका आधार कहते हुए किया।

छोटे से शमूएल ने एक बूढ़े एली के साथ मन्दिर में सेवा की, भावी पीढ़ियों के लिये, परमेश्वर की आवाज के प्रति संवेदनशील होना और अन्ततः राष्ट्र की अगुवाई करना सीखता रहा।

ये सब सामान्य लोगों से जो परमेश्वर से प्रेम करते थे से घिरे रहने के द्वारा आशीषित हुए, और जिन्होंने इस रिश्ते को उन तक पहुँचाते थे और परमेश्वर के साथ चलने में उनके शुरुवाती दौर में उन्हें उत्साहित करते थे। और यही बातें हम अपने संदर्भ में बच्चों के साथ होते देखना पसन्द करते हैं! इसलिये

हर जगह बच्चों को यीशु के साथ चलने में सहायता करने के लिये क्या करना होता है?

एक स्थानीय कलीसिया समूह के सदस्यों के रूप में - पास्टर, कलीसिया के सदस्य, बच्चों के कार्यकर्ता, स्कूल के शिक्षक, दादा दादी या नाना नानी, माता-पिता, युवा लोग और बच्चे बच्चों को आजीवन यीशु के सक्रिय चेले बने रहने और उसमें बढ़ते जाने के लिये, हम उनकी सहायता किस प्रकार कर सकते हैं?

हाल के वर्षों में, द ग्लोबल चिल्ड्रन्स फ़ोरम, जिसमें पूरे विश्व के लोग शामिल होते हैं, वे इन प्रश्नों को पूछते हैं। हमने बाइबिल के उदाहरणों और हमारे अपने अनुभवों को देखा है और पहले से मौजूद और उभरती हुई सिद्धान्तों और अभ्यासों का पता लगाया है। हमने कुछ सामान्य, साधारण बातों का पता लगाने की इच्छा प्रगट की, कोई भी व्यक्ति, परिवार या कलीसिया बच्चों के साथ आगे आने और यीशु के साथ चलने में उनकी सहायता कर सकते हैं।

'हर जगह बच्चों की चुनौती' में शामिल होने के बाद, आप दुनिया भर में लोगों और कलीसियाओं के साथ जुड़ने लगते हैं जो अवलोकन करने के लिये समय और ऊर्जा लगाते हैं, प्रश्न पूछते हैं और जुड़े रहने के लिये नए नए तरीकों को ढूँढ़ते हैं, बच्चों को शिष्यता के गुणों में बढ़ने और मसीह की देह में और उसके मिशन में शामिल करते हैं। हम एक प्रेम करनेवाले परमेश्वर की सेवा करते हैं जो हमारे स्थानीय संदर्भ और इसकी अनोखी चुनौतियों और वास्तविकताओं से बहुत गहराई से परिचित है। वह हमारे समुदाय के हर बच्चे को जानता है और उससे प्रेम करता है। वह हर एक से चाहता है कि वे उसके साथ सम्बन्ध में बढ़ते जाएँ। यदि हम नम्र हैं और उसकी बात सुनकर उसकी आज्ञा मानने के लिये तैयार हैं, तो हम विश्वास करें कि वह हमें अपने हाथों और पैरों के रूप में इस्तेमाल कर अपने चारों ओर के बच्चों तक पहुँचने के लिये हमारा मार्गदर्शन करेगा और हमें दृढ़ करेगा।

"बच्चे हर जगह के संसाधन दुनिया भर में बच्चों के साथ काम करने वाले लोगों के द्वारा बनाया गया है। कृपया आप इनका प्रयोग करने और जैसा आप चाहते हैं इन्हें लोगों के साथ बाँटने में स्वतन्त्र महसूस करें, परन्तु इन्हें लाभ के लिये बेचा नहीं जा सकता है। इस कार्यक्रम के लिये फाइलें और टूलबॉक्स में अन्य बातों की जानकारी http://www.childreneverywhere.com से डाउनलोड किया जा सकता है।"

सत्र 1: परिचय

जीने की शक्ति

परमेश्वर के साथ सम्बन्ध से क्या अन्तर दिखाई देता है?

फिलिप्पियों 2:12-13

फिलिप्पियों 4:12-13

गलातियों 5:22-23

रोमियों 8:1-2

रोमियों 8:9-14

तीतुस 3:4-7

अन्य विचार?

हर जगह यीशु के साथ चलने वाले बच्चे

अंदर के कवर पर जानकारी देखें

प्रभावकारी विचार

इस सत्र में किस विचार ने मुझपर प्रभाव डाला?

चुनौती गतिविधि

हमें अक्सर लगता है कि हम अपने आसपास के बच्चों के बारे में सब जानते हैं। लेकिन अगर हम कुछ समय निकालकर वास्तव में उनकी बातें सुनने की इच्छा रखते हैं तो हमें हमेशा उनके बारे में और अधिक सीखने को मिलता है। हमारे अगले सत्र से पहले, कम से कम 3 बच्चों से निम्न प्रश्नों के बारे में अवश्य बात करें:

- एक बच्चा होने की सबसे अच्छी बातें क्या क्या होती हैं?
- एक बच्चा होने पर आपको कौन सी बात अच्छी नहीं लगती है? (एक बच्चा होने पर सबसे मुश्किल क्या होता है?)
- जब आप बड़े हो जाएँगे तो आपको क्या लगता है कि आप कैसे होंगे?
- यदि आप अपने समुदाय में - या दुनिया में एक बड़ी चीज बदलना चाहते हैं – तो वह क्या होगा?
- आपको क्या लगता है कि परमेश्वर किसके समान है? आप क्या सोचते हैं कि वह हमें बताना पसन्द करेगा?
- ध्यान में रखने योग्य बातें:
- सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि जिन बच्चों की बातें हम सुनते हैं, जो वे सोचते हैं, हमें उन्हें बताने में वे स्वतंत्र महसूस करें और जो वे बताते हैं उसका सम्मान •करें। यह हमेशा आसान नहीं होता जैसा कि ईमानदारी से अपने विचारों को बताने के बदले बच्चों को अक्सर अनुमान लगाने की कोशिश करनी पड़ती है कि •हम क्या चाहते हैं कि वे हमसे कहें। इस बात को स्पष्ट करें कि कोई जवाब सही या गलत नहीं है।
- आम तौर पर बच्चे अधिक बात करेंगे यदि वे केवल वे नहीं हैं जिनका 'साक्षात्कार लिया गया' परन्तु इस बात से अवगत हों कि कुछ बच्चे अपने स्वयं के विचारों को व्यक्त करने के बदले समूह के विचारों को बेझिझक सामने रख देते हैं।
- बच्चों की अच्छी सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन करें: उदाहरण के लिये, अकेले या बंद दरवाजों के पीछे बच्चों का साक्षात्कार न करें, माता-पिता की अनुमति माँगें।

यदि सम्भव हो तो बातचीत के दौरान इसे लिख लें। प्रत्येक साक्षात्कार के बाद, निम्न बातों पर ध्यान दें: ऐसे पहलु जो आश्चर्यजनक या आपके लिये नए थे। उन पहलुओं की पुष्टि की गई हो जिन्हें आप पहले से ही जानते थे।

सुनी गई बातों को लिख लें:

सत्र 2: बच्चे

हम जिसे महत्व देते हैं

बच्चे आश्चर्य रूप से जटिल होते हैं। बाइबिल बच्चे हर जगह के वाक्यांश को इस प्रकार चित्रित करती है :

- बहुमूल्य दान परमेश्वर के स्परूप में बनाए गए हैं ... और ... वे लोग जो मनुष्य जाति के पापों के कारण परमेश्वर से अलग हो चुके हैं (उत्पत्ति 1:27; भजन संहिता 127:3; भजन संहिता 51:5; नीतिवचन 22:15; रोमियों 3:9-10)

- सीखने वाले जिन्हें मार्गदर्शन और अनुग्रह की आवश्यकता होती है ....और… दूसरों को सिखाने के लिये परमेश्वर द्वारा उपयोग किए जाने वाले (व्यवस्थाविवरण 6:6-9; भजन संहिता 78:4, 6-8; इफिसियों 6:4; 2 तीमुथियुस 3:14,15 ;1 श्मुएल 3:10, 17:45-47; 2राजा 5:2, 3; मत्ती 11:25, 21:14-16.)

- परमेश्वर की दृष्टि में मूल्यवान, और उसकी योजना के भागी... और ... निर्बल, और सुरक्षा की आवश्यकता (मत्ती 18:10; 19:13-16; लूका 18: 15-17; निर्गमन 22:22-24; जकर्याह 7:9-10; मत्ती 18:5-6; याकूब 1:27)

जैसा कि हम उनके साथ रहते हैं और उन्हें अपनी दुनिया में देखते हैं, हम बच्चों को हर जगह पाते हैं ... क्षमता में वृद्धि करना, अपनी पहचान को बड़ा करना और पता लगाना कि कैसे वे अपने आप में सही ठहरें और उसे सम्बन्धित करें, लगभग पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर होते हैं और इसलिये आसानी से शोषण, दुर्व्यवहार और उपेक्षित किए जाते हैं, उनके परिवेश के अनुसार गहरे संवेदनशील और अच्छी और बुरी बातों के द्वारा ढाल दिए जाते हैं। आज की निराशाजनक स्थितियों में खुशियों को लानेवाले और कल की सम्भावनाओं की खोजकर आशा जगानेवाले होते हैं।

बच्चे वे लोग हैं, जो अपनी सारी जटिलता, कमजोरी, चतुराई, अज्ञानता, रचनात्मकता और मन के टूट जाने पर भी अद्भुत होते हैं। परमेश्वर ऐसे लोगों का अपने परिवार में स्वागत करता है। परमेश्वर हमें बुलाता है, कि हम बच्चों का भी स्वागत करें: उन्हें देखने, उन्हें लोगों के रूप में देखने, उनको सुनने, उनके नाम जानने, उनसे प्रेम करने और उनके साथ जीवन बिताने के लिये। उन्हें यीशु के बारे में बताने और उसके साथ चलना सीखने के लिये उनकी सहायता करने बुलाता है।

बच्चों का विकास

बच्चे कैसे बढ़ते हैं पर अवलोकन

आयु में अन्तर

संस्कृति के बावजूद, बच्चों को उनके विकास में कुछ समान चरणों के माध्यम से जाना जाता है। हालांकि, वे सब अलग-अलग वृद्धि दर पर बढ़ते और परिपक्व होते हैं। विकास के चरणों की कोई भी परिभाषा केवल "सामान्य" या "औसत" का एक सामान्य सूचक है और इसलिये सीमित है। यह कुन्जी आपको आयु समूहों के बीच महत्वपूर्ण बदलावों पर विचार करने में सहायता कर सकता है।

	मानसिक	शारीरिक	सामाजिक	आत्मिक
निम्न आयु के बच्चे (आयु 2-4 वर्ष	वे नहीं जानते कि कैसे पढ़ा जाता है। वे केवल छोटे वाक्यांश याद कर सकते हैं। वे हमसे चाहते हैं कि हम सरल शब्दों का उपयोग करें। उनके पास ध्यान में रखने की अवधि कम होती है। वे नई नई बातों को सीखने में उत्सुक रहते और पसन्द करते हैं।	वे स्पर्श करना, महसूस करना, चलना फिरना पसन्द करते हैं। वे जल्दी ही थक जाते हैं। वे बच्चों के खेल को ज्यादातर अच्छी तरह से नहीं खेल पाते हैं। वे तेजी से बढ़ते जाते हैं।	वे जीतने / हारने को नहीं समझते हैं। वे साथ साथ बहुत अच्छे से खेलते हैं। वे साझा करने में अच्छे नहीं हो सकते हैं। उनके जीवन में माता-पिता सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति होते हैं।	वे अपने लिये परमेश्वर के प्रेम के बारे में बुनियादी सत्य को समझ सकते हैं। वे सही और गलत के बीच में अन्तर को समझ सकते हैं। वे क्षमा की उनकी जरूरत को पहचान सकते हैं और उद्धारकर्ता के रूप में मसीह के प्रत्युत्तर हो सकते हैं।
स्कूल जाने वाले छोटे बच्चे (आयु 5-8 वर्ष)	वे पढ़ना सीखने लगते हैं। कुछ को अभी भी अच्छे से नहीं आता है। उनके पास बहुत सारे सवाल होते हैं। वे सीखने के लिये उत्सुक होते हैं।	वे बचपन के रुचिकर खेलों को खेलना सीखते हैं। वे सक्रिय होना पसन्द करते हैं।	वे दोस्तों के साथ आनन्द मनाते हैं। वे अभी भी जीतने और हारने के बारे में ध्यान नहीं देते हैं। वे सामूहिक खेल का आनन्द लेते हुए बड़े होते हैं।	वे मसीह के लिये व्यक्तिगत निर्णय को समझने के लिये अधिक तैयार रहते हैं। वे बाइबिल की सच्चाई और अधिकार को जानना शुरू करते हैं।
स्कूल जाने वाले बड़े बच्चे (आयु 9-12 वर्ष)	उनकी स्मरण शक्ति बहुत तेज होती है। वे विभिन्न विषयों के बारे में तर्क से सोचने के लिये तैयार होते हैं। वे कठिन प्रश्न पूछते हैं।	कुछ अलग तरह से, किशोरावस्था के दृष्टिकोण के रूप में जल्दी बढ़ने लगते हैं। वे शारीरिक गतिविधि को पसन्द करते हैं। वे खाने में रूचि रखते हैं।	वे प्रतिस्पर्धी होते हैं। मित्र महत्वपूर्ण होते हैं। लड़कों और लड़कियों के बीच सामाजिक रूप से बड़ा अन्तर होता है। हर कोई निष्पक्षता के बारे में चिन्तित रहता है।	उन्हें मसीह के पीछे चलने के लिये अपने व्यक्तिगत निर्णय के आश्वासन की आवश्य- कता हो सकती है। वे अपने बल पर प्रार्थना करना, बाइबिल पढ़ना शुरू कर सकते हैं। वे नायकों को पसन्द करते हैं, जैसे यीशु!

प्राप्त शिक्षा पर विचार:

प्रभावकारी विचार

इस सप्ताह मैं किस बात पर अभ्यास करना चाहता हूँ?

चुनौती गतिविधि

विकल्प एक – पता लगाना

अगर कोई बात जो आपके सुनने के अभ्यास या इस सत्र में चर्चा में आया हो जिससे आपके दिमाग में रुचि पैदा हुई हो, तो उसके बारे में और अधिक जानने में कुछ समय व्यतीत करें। ऐसा आप बच्चों को थोड़ा और सुनकर और ऐसे लोगों से जो इसके बारे में अधिक जानते हों जैसे कि शिक्षकों, चिकित्सा कर्मियों, बच्चों के कर्मचारियों आदि से बात करके कर सकते हैं। जानकारी के लिये आप इन्टरनेट पर भी खोज सकते हैं। एक वेबसाइट जो सहायक सकती है वह यहाँ दिया गया है: https://www.unicef.org/sowc/. जिन बातों को आप पाते हैं उसे लिख लें ताकि आप इसे एक या दो मिनट में बता सकें।

विकल्प दो - रिश्ते

बच्चों को जानने और समझने के लिये हमें वह वहाँ ले जाएगा जहाँ वे होते हैं और जहाँ वे अपना समय बिताते हैं। और उनमें से कुछ जगह आपके या सामुदायिक इलाके में कहाँ पर हैं, जहाँ बच्चे पाए जाते हैं? एक जगह चुनें जहाँ आप उनमें से कुछ के साथ मिल सकते हैं और उन्हें जान सकते हैं, वे क्या कर रहे हैं और वहाँ जो वे कर रहे हैं क्यों कर रहे हैं।

विकल्प तीन – फोटोग्राफी

उन जगहों की आस पास की तस्वीरें लें जिसमें हम बच्चों से मिलते हैं। दोनों सुरक्षित और असुरक्षित स्थितियों के उदाहरणों को देखें। आप अगले सत्र में उन तस्वीरों को लाएँ ताकि आप उन्हें दिखा सकें – फोन या कम्प्यूटर पर अच्छी तरह से काम करें।

टिप्पणियाँ

सत्र 3: हर जगह

स्थानीय परिवेश

सुरक्षित और असुरक्षित परिवेशों के बारे में विचार

एक सुरक्षित पृष्ठभूमि तैयार करना

बच्चों के और उनके परिवेश के प्रति हमारी जिम्मेदारी के बारे में बाइबिल क्या कहती है?

इब्रानियों 11:23

भजन संहिता 82:3

मत्ती 18:10

एक सुरक्षित पृष्ठभूमि क्या है?

हमारे संदर्भ में एक सुरक्षित पृष्ठभूमि को कैसा दिखना चाहिए?

प्रभावकारी विचार

अगले हफ्ते मैं एक काम को अभ्यास में लाना चाहता हूँ वह एक बात कौन सी है?

चुनौती गतिविधि

एक महत्वपूर्ण कदम क्या है जो हम अगले सत्र से पहले ले सकते हैं जो हमारे परिवार या कलीसिया को हमारे स्वयं के बच्चों और हमारे समुदाय के बच्चों के लिये एक सुरक्षित पृष्ठभूमि बना सकता है?

योजनाएँ

प्रभावकारी विचार

सत्र 4: यीशु

यीशु के समान बनना

हम अपने समुदाय में लोगों के लिये परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कैसे करते हैं?

परमेश्वर बच्चों के माध्यम से काम कर सकता है

मत्ती 22: 6-16 से विचार

वे लोग कौन हैं जिन्हें परमेश्वर इस्तेमाल कर सकता है?

- 1 कुरिन्थियों 1:27

- याकूब 2:5

- प्रेरितों के काम 4:13

- भजन संहिता 8:2-4

हमें बच्चों को सेवा करने के लिये सक्षम बनाने की आवश्यकता है

आप क्या सोचते हैं, कि हमारे लिये वे 2-3 सबसे महत्वपूर्ण चीजें क्या हैं जो बच्चों को स्वतन्त्र करने और उन्हें हमारे परिवारों और कलीसियाओं में परमेश्वर की सेवा करने के लिये तैयार करते हैं?

वर्णन करें कि बच्चे अपने परिवारों और कलीसियाओं में किस प्रकार सेवा करते हैं या फिर नहीं करते हैं।

चीजों को बेहतर बनाने के लिये क्या करना होगा?

प्रभावकारी विचार

इस सत्र के दौरान कौन सी एक बात ने आप पर प्रभाव डाला? परिणामस्वरूप आप क्या करेंगे?

चुनौती गतिविधि

बच्चों के एक समूह से पूछें कि वे परमेश्वर के मिशन में किस प्रकार भाग लेना लेना पसन्द करेंगे। उनके साथ सम्भावनाओं की एक सूची बनाएँ और जो वे करेंगे उसे चुनने के लिये उनकी मदद करें। बच्चों की सहायता करें जैसा कि वे अपनी योजना तैयार करते हैं। यदि सम्भव हो, तो उस समूह को दिखाने के लिये कुछ तस्वीरें खींच लें!

योजनाएँ

विवरण दें

आपकी कार्य योजना क्या थी?

उसके परिणाम क्या थे?

क्या किसी बात से आपको आश्चर्य हुआ?

सत्र 5: के साथ

हम इसे अकेले नहीं कर सकते!

यह सच क्यों है?

परमेश्वर के साथ सम्बन्ध

खोई हुई भेड़ की कहानी के माध्यम से हम परमेश्वर के साथ हमारे रिश्ते के बारे में क्या सीखते हैं?

वे कौन सी बातें हैं जो परमेश्वर के साथ हमारे सम्बन्धों के निर्माण में सहायता करती हैं और कौन सी बातें हैं जो इसे रोकती हैं?

क्या ये बातें एक बच्चे के लिये उचित लगते हैं? वे किन किन अनचाही रुकावटों का सामना कर सकते हैं? हम उनकी सहायता कैसे कर सकते हैं?

दूसरों के साथ सम्बन्ध

अपने सम्बन्धों का ध्यान रखें

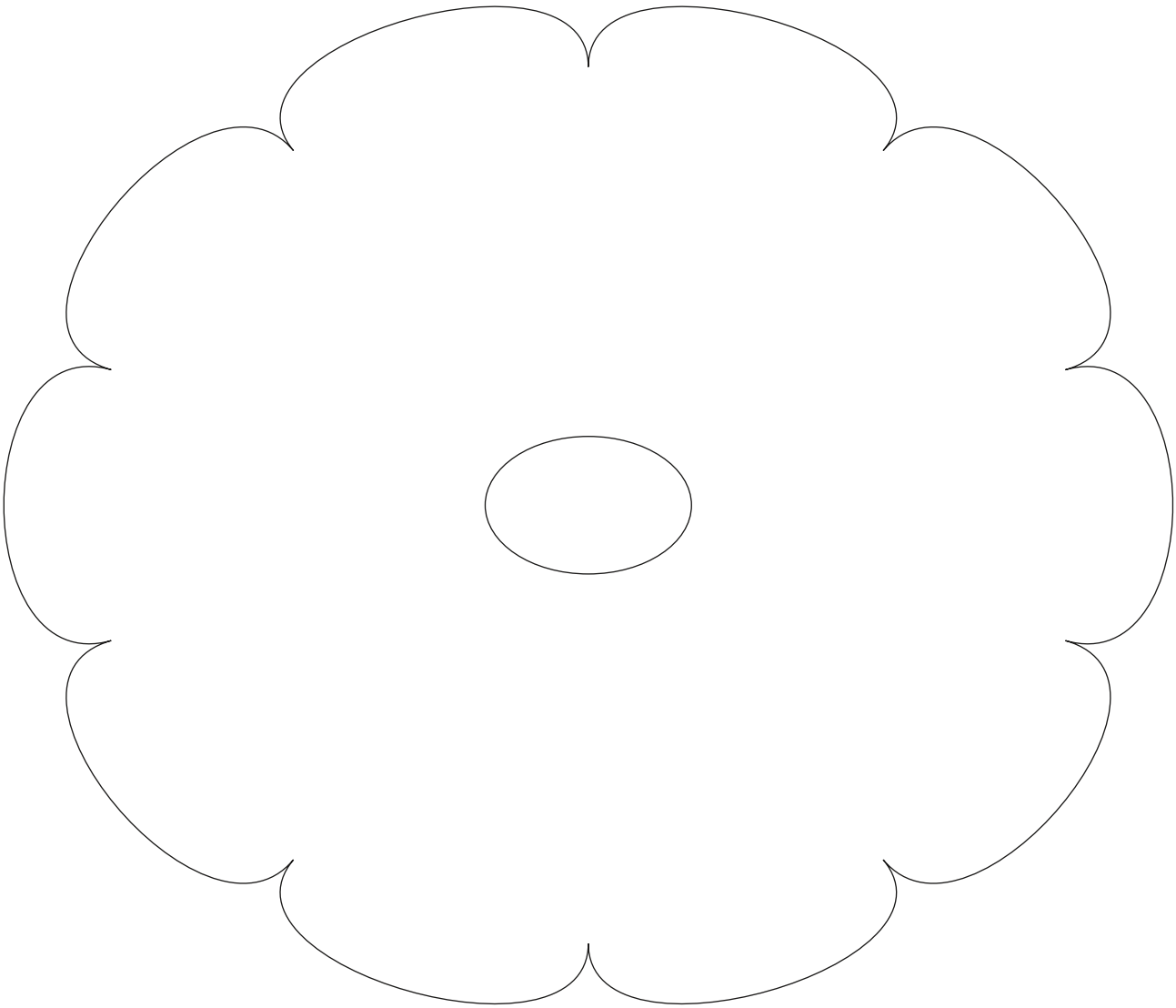

इन आयतों में लोगों के बीच सम्बन्धों से हम क्या सीख सकते हैं?

- अब्राहम और सारा - उत्पत्ति 12:1-13:1, 16:1-6

- अब्राहम और इसहाक - उत्पत्ति 22:1-19

- तीमुथियुस और माता और नानी

- हन्ना और शमूएल- 1 शमूएल 1:21-28

- लाजर और उसकी बहने - यूहन्ना 11:1-43, लूका 10:38-41

- रूत और नाओमी – रूत 1:8-18

- इसहाक और रिबका - उत्पत्ति 27:40 (याकूब और एसाव)

- मूसा, उसकी बहन और माता - निर्गमन 6:1-10

हमारे परिवार और कलीसिया में सम्बन्धों के बारे में विचार

प्रभावकारी विचार

इस सत्र में मेरा एक नया विचार क्या है?

चुनौती गतिविधि

विकल्प एक - संसाधन

कुछ संसाधनों का पता लगाएँ जो बच्चों को बाइबिल पढ़ने और परमेश्वर के साथ समय बिताने में सहायता के लिये उपलब्ध हों।

विकल्प दो – अन्तर्पीढ़ीय सम्बन्ध

अपनी कलीसिया में अन्तर्पीढ़ीय सम्बन्धों को बढ़ाने के लिये कुछ विचारों के साथ आएँ। अपने अगुवों, माता-पिता और बच्चों से बात करें।

विकल्प तीन – बच्चों के साथ सम्बन्ध

एक या दो बच्चे चुनें जिनके साथ आप नियमित रूप से संपर्क करते हैं, परन्तु उन्हें बहुत अच्छी तरह से नहीं जानते। उनके साथ बात करने के तरीके ढूँढ़ें और उन्हें और उनके परिवारों को अच्छी तरह जानें (बच्चे की अच्छी सुरक्षा प्रक्रियाओं का पालन करना सुनिश्चित करें: उदाहरण के लिये अकेले या बंद दरवाजों के पीछे बच्चों के साथ समय व्यतीत न करें, माता-पिता की अनुमति माँगें।)

टिप्पणियाँ

सत्र 6: चलते हैं

सीखना एक सतत प्रक्रिया है

इस खेल से आपने क्या क्या सीखा?

सीखने के विभिन्न तरीके

इन आयतों में आप सीखने के कौन कौन से तरीके देखते हैं?

- व्यवस्थाविवरण 6:6-9

कुछ अन्य तरीके क्या हैं जिन्हें आप सीखने के अवसरों को बढ़ाने के लिये उपयोग कर सकते हैं?

प्रभावकारी विचार

इस सत्र में आप किस बात से प्रोत्साहित हुए?

इस सत्र में कौन सी बात ने आपको चुनौती दी?

चुनौती गतिविधि

सीखने का अवलोकन करना

अवलोकन करें कि आपके घरों और कलीसिया की गतिविधियों में बच्चे किस प्रकार सीख रहे हैं। इसमें औपचारिक शिक्षा शामिल हो सकती है जैसे कि स्कूल और सन्डे स्कूल के पाठ, या यह अनौपचारिक सीखना हो सकता है जैसे गाने सुनना या घर पर मदद करना या देखना कि दूसरे लोग कैसे कार्य करते हैं। ध्यान से देखें! बच्चे हर समय सीखते रहते हैं - यह तो उनका काम ही है!

बच्चों को सीखते हुए आप कैसे देखते हैं?

क्या हम यह सुनिश्चित करते हैं कि हम जो कर रहे हैं, प्रभावी और जीवन-निर्माण करनेवाला एक अच्छा काम कर रहे हैं?

इसमें सुधार लाने के लिये हम क्या कर सकते हैं?

सत्र 7: अगला चरण

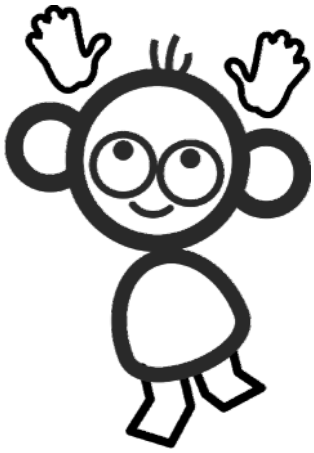

साथ में काम करना

क्या आप सोचते हैं कि परमेश्वर हमें एक साथ काम करने के लिये बुलाता है?

- 1 कुरिन्थियों 12:12-26

- सभोपदेशक 4:12

- यूहन्ना 17:20-23

- इफिसियों 4:4-6

- भजन संहिता 133

हमारे बच्चों के जीवन में कौन कौन शामिल होते हैं?

काम को अधिक पूरा करने के लिये हम कैसे एक साथ काम कर सकते हैं?

पिछले हफ्तों की समीक्षा और भविष्य के लिये योजनाएँ

कौन-कौन सी बातें सत्रों के दौरान आप के सामने आईं जब हम उनसे होकर गए?

आप आगे क्या करना चाहेंगे?

परमेश्वर इस समूह की अगुवाई कैसे कर रहे हैं?

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

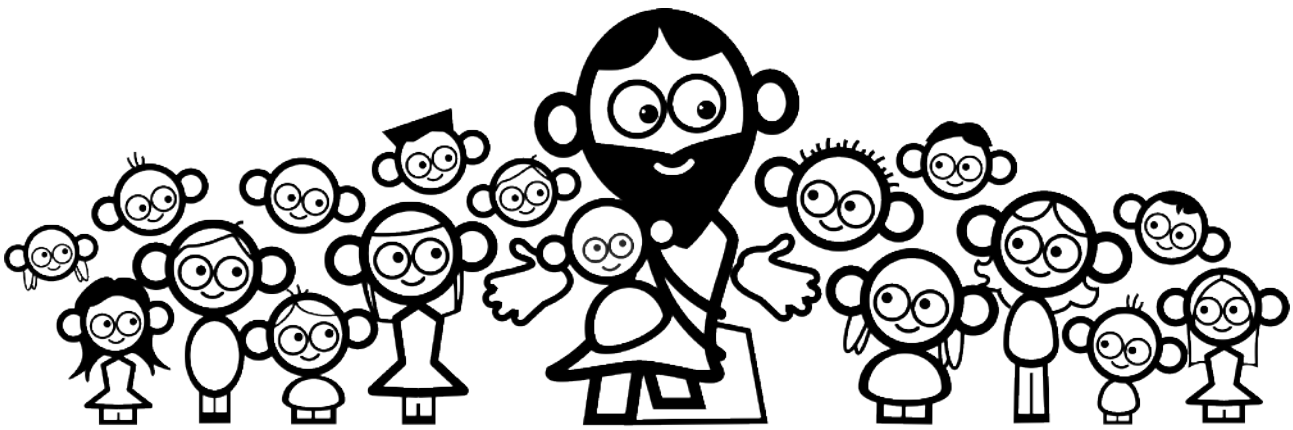

बच्चों को मेरे पास आने दो

बच्चे

उन्हें परमेश्वर की दृष्टिकोण से देखना

हर जगह

उनकी दुनिया में प्रवेश करना

यीशु

दूसरों को यीशु से मिलाना

के साथ

सम्बन्धों के माध्यम से बढ़ना

चलते हैं

यात्रा में आगे बढ़ना